आज़ादी का
अमृत महोत्सव

भारतीय स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव : संधी आणि आव्हाने

मुख्यसंपादक
प्राचार्य.डॉ.सदाशिव सरकटे

Scanned with CamScanner

१०	स्वातंत्र्य चळवळीतील मराठी साहित्य - साने गुरुजी	डॉ. शकुंतला मिठाराम भारंबे	८२
११	तावडी बोली जिवंत ठेवणारा लेखक - डॉ. अशोक कौतिक कोळी	स्वप्नील युवराज भोसले	९७
१२	'जी.डी.बापू लाड : आत्मकथन एक संघर्ष यात्रा' मधील स्वातंत्र्य चळवळीचे चित्रण	प्रा. धनंजय वसंत भाट	१०६
१३	मराठीसाहित्य आणि व्यक्तिमत्व विकास	प्रा. डॉ. अपर्णा अ. पाटील	११३
१४	संत वाङ्मयातील समता, स्वातंत्र्य, मानवता	प्रा. डॉ. गवराम नाना पोटे	१२०
१५	संयुक्त महाराष्ट्र लढ्यातील शाहीरी वाङ:मयाचे (मराठी साहित्य) योगदान	पुरुषोत्तम प्र. सुर्य	१२७
१६	समग्र जीवनाचे सम्यक आकलन करणारा कथासंग्रह - मांडूळ	प्रो. डॉ. वासुदेव सोमाजी वले	१३७
१७	कवी विठ्ठल वाघ यांची कविता	प्रा. डॉ. रामकृष्ण प्रधान	१४९
१८	मराठी कथा कादबंरी आणि स्वतंत्र्य चळवळ	प्रा. मिलिंद ठोकळे	१६०
१९	'तमस में सांप्रदायिकता आजादी के पूर्व और आज'	प्रा. हिरा पोटकुले	१६६
२०	स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता पूर्व की हिन्दी कविता	डॉ. कविता मीणा	१७२

Scanned with CamScanner

'तमस में सांप्रदायिकता आजादी के पूर्व और आज'

प्रा. हिरा पोटकुले

हिंदी विभाग, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर गढ़ी, जि. बीड

साहित्य समाज का दर्पण है क्योंकि समाज और साहित्य में परस्पर घनिष्ठ संबंध होता है। लेखक समाज में होने वाली घटनाओं को ही अपनी लेखनी से अभिव्यक्त करता है। किसी भी सभ्यता, संस्कृति, विकास तथा व्यवस्था को वहां के साहित्य में देखा जा सकता है। भारत जातियों पर, धर्मों पर तथा अनेक उपजातियों पर आधारित राष्ट्र है, इसी कारण ही राष्ट्रीयता से अधिक धार्मिकता जातीयता यहां के लोगों के दिलों दिमाग पर ज्यादा हावी रहती है।यही कारण है कि भारत लंबे अरसे तक विदेशी हुकुमत का गुलाम रहा है। भीष्म साहनी जी ने 'तमस' उपन्यास में भारत विभाजन के पूर्व का सीमावर्ती प्रदेश पंजाब के समस्त परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। क्योंकि भीष्म जी ने इस भीषण स्थिति, परिवेश को केवल देखा नहीं बल्कि जिया है, भोगा है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में हिंदू, मुस्लिम, सिख और उच्च वर्ग, मध्यवर्ग और निम्न वर्ग के परिवारों को सामाजिक रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार--विचार, भावनाओं को विस्तृत रूप से चित्रित किया है। भारतीय इतिहास के एक ऐसे अंधकारपूर्ण युग का चित्रण किया है जिसमें मानवीय मूल्य एवं एक दूसरे के प्रति विश्वास मृतप्राय होने के कारण मनुष्य के अंदर छुपी पशुता को उजागर करते हुए मनुष्य के मनुष्यत्व पर सवाल खड़ा किया है। उन्होंने ऐसे कटु, विभत्स सत्य को प्रस्तुत किया है जो ना केवल उस समय के तत्काल बल्कि हमें भविष्य के प्रति सचेत करता हैं। सांप्रदायिक दंगे का शिकार होता पंजाब का एक छोटा सा हिस्सा पूरे भारतवर्ष के भीषण दास्तां, सांप्रदायिक स्थिति को

Scanned with CamScanner

अभिव्यक्त करने में सक्षम है। भीष्म जी ने आजादी के पूर्व उत्पन्न विपरीत परिस्थितियों का ऐसा सजीव चित्रण किया है कि वह दृश्य हमारी आंखों के सामने उपस्थित होते हैं। उन्हें देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान परिस्थितियों में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं आया बल्कि सांप्रदायिकता का क्षेत्र और अधिक बढ़ गया है।

मध्यकाल में मुगलों ने भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने पर मुस्लिम समाज का प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा। मुस्लिम समाज और भारतीय समाज में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता होने के बाद भी बहुत अधिक समय एक साथ रहने से दोनों ने मेल–मिला तो हुआ लेकिन धर्म की भिन्नता कहीं ना कहीं दोनों में विद्यमान रही। व्यापार का उद्देश लेकर अंग्रेज भारत मे आये और उन्होंने धीरे–धीरे भारत में अपने उपनिवेश स्थापित करके अपने साम्राज्य को बढ़ाना चाहा, इसलिए उन्होंने भारतीय एकता को खंडित करने का प्रयास किया और इसमें सफल रहे क्योंकि इसके लिए उन्होंने धर्म की भिन्नता का बीज जो हिंदू–मुस्लिम में पहले से विद्यमान था उसको अंकुरित करने का कार्य किया। अंग्रेजों ने भारत में धार्मिकता का जो बीज बोया था उसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज में सांप्रदायिक भावना का विकास हुआ और मुस्लिम और हिंदू धर्म के लोगों में खाई पैदा हुई।

अंग्रेजों ने अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए हमेशा हिंदू–मुसलमानों में दरारें पड़ने के लिए सांप्रदायिकता का सहारा लिया है। और भारतीय उनके शिकंजे में फंसे गए हैं। भारतीय समाज में एक साथ रहने वाले विभिन्न धर्म के लोगों ने एक दूसरे को उतना नहीं समझा जितना अंग्रेजों ने कम समय में इन सभी धर्मों के लोगों का अध्ययन करके उनमें दरार डालने की बात को समझा। मुस्लिम समाज को सूअर से सख्त नफरत है। मुस्लिम समाज में सूअर को खाना तो दूर की बात है उसे देखना भी गुनाह मानते हैं। हिंदू समाज में गाय को भगवान का रूप मानकर उसकी पूजा की जाती है। मुस्लिम समाज में सूअर निच्छिद्ध मानकर गाय का मांस खाना

Scanned with CamScanner

उचित माना जाता है। इसी बात का फायदा अंग्रेज उठाते हैं। रिचर्ड अंग्रेज अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करता है। वह भारतीय लोगों की अबोधता से पूरी तरह परिचित है। वह हिंदू–मुस्लिमों में फूट डालने के लिए एक प्लॅन बनाता है। अपने आदमी मुराद अली को यह हुक्म देता है कि किसी को भी पांच रुपये देकर सूअर मारो और मस्जिद के सामने फेंको। चमार जाति का शत्रू जो गरीब है और आर्थिक विपन्नता से जूझ रहा है वह मुराद अली के बहकावे में आकर सूअर को मारता है लेकिन उसे यह पता नहीं है कि इस मरे हुए सुअर का क्या किया जा रहा है। अंग्रेजों का पिट्ठू मुराद आली नथू को झूठ ही कहता है," हमारे सलोतरी को मरा हुआ सूअर चाहिए, डाक्टरी काम के लिए।"मुराद आली जब नथू को सुवर मारने के लिए कहता है तो उसे सतर्क भी करता है, मोर मारने के लिए कहता तो उसे सतर्क भी करता है,"इधर का इलाका मुसलमानी है। किसी मुसलमान ने देख लिया तो लोग बिगड़ेंगे, तुम भी ध्यान रखना। हमें भी यह काम बुरा लगता है, मगर क्या करें, साहिब का हुक्म है कैसे मुंह मोड़ दे।"(१) प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि मुराद अली को अच्छी तरह पता है कि इस घटना से बात बिगड़ सकती है फिर भी वह ऐसा करता है। असल में वह सूअर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक दिया जाता है जो सांप्रदायिक आग भड़काने के लिए कारण बनता है। नत्थू सच्चाई जानकर इन स्थितियों का अपराधी खुद को मानता है। एक आम व्यक्ति अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लालच के कारण बहकावे में आता है और गलत काम करता है और सच्चाई जानकर उद्विग्न होकर विवशता के साथ जीता है। मुराद अली नत्थू से सूअर मरवा कर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक देता है उसका परिणाम मुसलमान इस घटना के लिए हिंदुओं को दोषी मानकर बदला लेना चाहते हैं। जब बक्शी और जनरल मिलकर मस्जिद की सीढ़ियों से सूअर को हटाते हैं उसी वक्त मुस्लिम व्यक्ति गाय को दौड़ा कर ले जाता है। यही से दंगे की शुरुवात हो जाती है।

Scanned with CamScanner

भारतीय समाज में सांप्रदायिकता का प्रभाव अंग्रेजों के आने के बाद अधिक विकसित हुआ। हिंदू–मुस्लिम धार्मिक भिन्नता का फायदा अंग्रेजों ने अपनी सत्ता अधिक मजबूत करने के लिए किया। स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय समाज में शिक्षा का अभाव होने के कारण इसका फायदा अंग्रेजों के साथ–साथ विभिन्न राजनीतिक दलों ने ले लिया। यह लोग भारतीय जनता को धर्म के नाम पर हिंदू, मुस्लिम, सिख को आपस में लड़ाकर अपने स्वार्थ पूर्ति करते थे। इसका परिणाम यह होता है कि जो तिने दिन भाईचारे के साथ रहते थे वही गरीब और अशिक्षित जनता बिना सोचे समझे अपने ही पड़ोसी भाइयों का गला काटने लिए तैयार हुए। वे एक दूसरे के दुश्मन बन गऐ। जब सांप्रदायिक दंगा फैलता है तब जहां हिंदू की संख्या अधिक है वहां से मुसलमान जान बचाकर भागने लगते हैं और जहां मुसलमानों की संख्या अधिक है वहां से हिंदू जान बचाकर भागते हैं। भीष्म जी ने हरनाम सिंह और बंतो के माध्यम से भारत के तमाम सामान्य जनता के दुख, दर्द, पीड़ा को व्यक्त किया है। हरनाम सिंह और उनकी पत्नी को दंगे के कारण अपना घर, दुकान छोड़कर जान बचाकर भागना पड़ता है। हरनाम सिंह अपनी पत्नी से कहता है,"बंतो वे लोग मारने पर उतारू हुए तो मैं पहले तुझे खत्म कर दूंगा फिर अपने को खत्म कर लूंगा।"(२) दूसरी ओर हरनाम का बेटा इकबाल सिंह मीरपुर गांव में अकेला था और बेटी जसबीर जहा दंगे हो रहे थे वह शहर में थी। उनकी बेटी दंगे में मुसलमानों से पकड़े जाने के डर से कुएं में कूदकर जान दे देती हैं और बेटा मुसलमानों के हाथों पकडा जाता है। मुसलमान लोग जबरदस्ती उसका धर्म परिवर्तन करवा देते हैं। उसके साथ तरह–तरह का मजाक बनाकर उसे बेइज्जत करते हैं,"वातावरण में गहरी संजीदगी और धर्म–भावना कांप रही थे। दिन ढलते–ढलते इकबाल अहमद की सुन्नत हुई उसके लिए दर्द को बर्दाश्त करना बहुत कठिन हो गया था। बुजुर्ग सारा वक्त उसे सहारा दिए हुए थे और सुन्नत के वक्त बार–बार उसके कान में कह रहे थे, तेरा निकाह कराएंगे। बड़ी खूबसूरत

Scanned with CamScanner

औरत तुम्हें देंगे, कालू तेली की बेवा तेरी उम्र की है –जवान गठीली। उसे देख कर तेरी रूह खुश हो जाएगी। अब तो हमारा अपना है, आब तू शेख है, शेख इकबाल अहमद!"(३) भीष्म जी ने इस घटना का चित्रण करके समस्त मानव जाति पर सवाल खड़ा किया हैं। क्या इस तरह का कृत्य करने वाले को सच्चे धार्मिक कहेंगे या यही धर्म का तत्वज्ञान है। क्या किसी व्यक्ति को ऐसी पीड़ा दे कि वह जीते जी मर जाए।

हिंदू मुस्लिम संबंधों, मुस्लिम–सिख संबंधों में घृणा अंग्रेजों के शासनकाल से तीव्र हुई। इस दूरी का फायदा उठाकर अंग्रेज सरकार ने 'फूट डालो और शासन करो' नीति को अपनाया। अंग्रेजों ने स्वतंत्रता आंदोलन को कमजोर करने के लिए सांप्रदायिकता का सहारा लिया। सामाजिक असमानता, विभिन्न धर्मों, जातियों के बीच सत्ता प्राप्त करने के चक्रव्यूह में फंस कर आम जनता सांप्रदायिक दुर्भावना का शिकार बन गई। इन परिस्थितियों का गलत फायदा विभिन्न ने उठाया। वानप्रस्थी जी और देवदत्त हिंदू संरक्षक के लीडर है। यह लोग हिंदुत्व के नाम पर गौ–हत्या के मुद्दे पैदा करके अपने राजनीतिक और धार्मिक उपजीविका का साधन बनाते हैं। ये स्वार्थी लोग अपने शिकंजे में सामान्य युवकों को फंसाते हैं। लाला लक्ष्मीनारायण का लड़का रणवीर को देव दत्ता हिंदू युवक संरक्षक का लीडर बनाता है। रनवीर को युवक समाज को सक्रिय करने का काम दिया जाता है। ये लोग रणवीर के अंदर हिंसा का भाव जागृत करते हैं। भोला–भाला रणवीर सांप्रदायिक शक्तियों में फंस जाता है। रणवीर को युवकों में हिंसा फैलाने के लिए सक्रिय किया जाता है, वह अपने साथियों को सिखाता है,"शत्रु की छाती अथवा पीठ को कभी भी निशाना नहीं बनाओ। वार हमेशा कमर में करो या पेट में। और घुमावदार छुरा घोंपने के बाद उसे अंदर ही अंदर थोड़ा मोड़ दो, इससे अंतडियॉ बाहर आ जाएगी। अगर तुम भीड़ में शत्रु पर वार करते हो तो छुरा बाहर खींचने की कोशिश नहीं करो, उसे वही रहने दो और भीड़ में खो जाओ।"(४) इन दलों ने देश के युवकों को इस प्रकार खूंखार बना दिया है कि जो

Scanned with CamScanner

लड़का मुर्गी काटने से डरता था वही आज मनुष्य को किस प्रकार मारा जाए यह सिखाता है। देश का भविष्य युवकों पर निर्भर होता है लेकिन यही युवक सांप्रदायिक शक्तियों के अधीन होकर उसके जाल में फंसे हैं।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों के बीच विषमता का बीज बोया। अंग्रेज सरकार ने इस सांप्रदायिकता को न केवल बढ़ावा दिया बल्की मुस्लिम सांप्रदायिकता को संरक्षण भी दिया। यही संप्रदायिकता, यही नीति स्वतंत्रता के पश्चात अधिक तेजी से फैल रही है। वर्तमान समाज में राजनेता अनेकानेक संगठन अपने स्वार्थ के लिए यही नीति अपनाते हुए दिखाई देते हैं। वर्तमान समाज में राजनीति में चुनावी दंगल राजनीतिक उथल-पुथल, दल- बदल, वोट बैंक खरीदने के कारण सामान्य जीवन खंड-खंड हो गया है। स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेज भारतीयों के शासक और शोषक थे परंतु स्वतंत्रता के बाद यही काम वर्तमान समाज के नेतागण कर रहे हैं। वर्तमान समाज में ऐसे राजनीतिज्ञ विरले है जो समाज सेवक है। समाज सेवा से उन्हें कोई लेना देना नहीं है। कुछ राजनेता समाज के लिए कुछ काम कर भी देते हैं तो उसमें भी उनका स्वार्थ छिपा होता है। अतः स्पष्ट है की साहनी जी ने 'तमस' उपन्यास में भारतीय समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता चित्रण बडी सजीवता के साथ किया है। स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय समाज मे उपजी सांप्रदायिकता कम होने के बजाये स्वतंत्रता के बाद उसका क्षेत्र अधिक बढ गया है। वर्तमान समय मे निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा धर्मोन्मद के कुहासे में धर्म के नाम पर अधर्म करने के लिए धर्मभीरू जनता को गुमराह किया जा रहा है।

संदर्भ सूची:-

१) तमस-भीष्म साहनी,पृ.सं.८-६
२) तमस-भीष्म साहनी,पृ. सं.२०६
३) तमस-भीष्म साहनी,पृ सं..१२२
४) तमस-भीष्म साहनी,पृ. सं.८७

***

Scanned with CamScanner